राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

पालकों की नज़र में

हो सकता है कि एन.सी.ई.आर.टी. ने इस ढांचे को अंतिम रूप देने से पहले शिक्षकों से परामर्श लिया हो लेकिन पालकों को इसमें शामिल किया गया हो, ऐसा नहीं लगता। शैक्षिक प्रक्रिया में पालक और शिक्षक हमेशा मूक और अदृश्य 'प्रभावित' होते हैं। हम जैसे कुछ अभिभावक हतप्रभ हैं कि हमारे बच्चों की शिक्षा जैसे अहम मुद्दे पर निर्णय वकीलों और सुप्रीमकोर्ट के जजों ने ले लिया है।

आर. राजेश

स्कूली शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) एन.सी.ई.आर.टी. के पहले के पाठ्यक्रमों से काफी भिन्न है। इसमें कई सारे व्यापक बदलावों की सिफारिश की गई है और यह काफी हद तक एक नीतिगत दस्तावेज़ लगता है। मीडिया और इस मामले की सुनवाई कर रहे सुप्रीम कोर्ट के एक जज ने इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2002 कहा है, जो दरअसल यह है नहीं। केन्द्रीय शैक्षिक सलाहकार बोर्ड (केब) जैसी सलाहकार संस्था की सलाह के बगैर इस ढांचे को अंतिम रूप दे दिया गया है। हालांकि एन.सी.ई.आर.टी. दावा करती है कि उसने इस विषय पर गहन सलाह मशविरा किया है मगर वस्तुस्थिति यह है कि कई सारे ऐसे शिक्षा शास्त्रियों और विशेषज्ञों ने इस दावे की सत्यता पर सवाल उठाए हैं कि एन.सी.ई.आर.टी. ने उनसे परामर्श लिया है। हो सकता है कि एन.सी.ई.आर.टी. ने इस ढांचे को अंतिम रूप देने से पहले शिक्षकों से परामर्श लिया हो लेकिन पालकों को इसमें शामिल किया गया हो, ऐसा नहीं लगता। शैक्षिक प्रक्रिया में पालक और शिक्षक हमेशा मूक और अदृश्य 'प्रभावित' होते हैं।

हम जैसे कुछ अभिभावक हतप्रभ हैं कि हमारे बच्चों की शिक्षा जैसे अहम मुद्दे पर निर्णय वकीलों और सुप्रीम कोर्ट के जजों ने ले लिया है। हम साम्प्रदायिक पागलपन की उस आग को देखकर चिन्तित हैं जिसने पूरे गुजरात को झुलसा डाला था। गुजरात बोर्ड की मौजूदा स्कूली पाठ्यपुस्तकों ने हमें भयभीत कर दिया। यहां इतिहास विषय में हिन्दु पुराणों को व्यापक स्थान प्राप्त है। साथ ही उसमें स्पष्ट साम्प्रदायिक रुझान है। हमने पाया कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु और फरवरी के बाद गुजरात में विवेकशून्यता की स्थिति के बीच गहरा सम्बंध है। हम अपने आपसे और बतौर पालक अपनी उदासीनता पर सवाल करते हैं जिसने ऐसी स्थिति को सम्भव बनाया।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अध्ययन के बाद पालकों और शिक्षकों के फोरम से जारी एक वक्तव्य में हमने कहा था, "स्कूली शिक्षा में सत्य की खोज, तार्किक सोच और वैज्ञानिक तार्किकता को शामिल किया जाना चाहिए। हमें जीवन और समाज के प्रति एक धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक सोच को प्रोत्साहित करना चाहिए। ताकि विद्यार्थी साम्प्रदायिक, भाषागत और अन्य संकीर्ण पूर्वाग्रहों से ऊपर उठ सकें। शिक्षा को सामाजिक जागरूकता, समाज के प्रति दायित्व की भावना, काम के प्रति सम्मान की भावना और शोषण व अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की हिम्मत विकसित करनी चाहिए।"

हम मानते हैं कि हमारे द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के ये उद्देश्य कुछ मूल्यों को प्रतिबिम्बित करते हैं। हमें ये मूल्य दरकार हैं। हमारा 'प्रगति' के विचार पर पूरा विश्वास है। हमें विश्वास है कि समाज में हर वक्त दो तरह के मूल्य कार्य करते हैं - एक तरह के मूल्य तरक्कीपसन्द होते हैं जो समाज को आगे ले जाते हैं और दूसरी तरह के प्रतिगामी मूल्य समाज को पीछे धकेल देते हैं। एन.सी.एफ. में भी मूल्यों और मूल्य आधारित शिक्षा की